No. of Printed Pages : 4

MSK-003

स्नातकोत्तर कला उपाधि (संस्कत)

सत्रांत परीक्षा

दिसम्बर. 2021

एम.एस.के.-003 : दर्शन : न्याय, वैशेषिक, वेदान्त सांख्य और मीमांसा

समय : 3 घण्टे *अधिकतम अंक : 100*

नोट : (*i*) सभी प्रश्न अनिवार्य हैं।

(*ii*) प्रश्न–पत्र तीन खण्डों में विभाजित है। प्रत्येक खण्ड में दिये गये निर्देशानसार ही प्रश्नों के उत्तर दीजिए।

खण्ड—क

1. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दीजिए : 10×3=30

(क) भारतीय दर्शनों के स्वरूप का वर्णन कीजिए।

अथवा

न्याय–वैशेषिक दर्शन के प्रमख सिद्धान्तों का वर्णन कीजिए।

(ख) तर्कसंग्रह के अनसार शब्द–प्रमाण का विवेचन कीजिए।

अथवा

वेदान्त के अनसार अनबन्ध चतष्टय की व्याख्या कीजिए।

(ग) सांख्य दर्शन के अनसार प्रमाण का विवेचन कीजिए।

अथवा

मीमांसा दर्शन का परिचय देते हए 'मन्त्र' पर प्रकाश डालिए।

खण्ड—ख

2. निम्नलिखित की ससन्दर्भ व्याख्या कीजिए : 10×4=40

(क) उत्क्षेपणावक्षेपणाकञ्चनप्रसारणगमनानि पञ्च कर्माणि।

अथवा

असाधारणं कारणं करणम। कार्यनियतपर्ववत्ति: कारणम। कार्यं प्रागभावप्रतियोगि।

(ख) "अधिकारी त विधिवदधीतवेद वेदाङ्गत्वेना पाततोऽधिगताखिल वेदार्थोऽस्मिन जन्मनि जन्मान्तरे वा काम्यनिषिद्धवर्जनपरस्सरं नित्यनैमित्तिक-प्रायश्चितोपासनानष्ठानेन निर्गतनिखिलकल्मषतया नितान्तनिर्मलस्वान्त: साधनचतष्टयसम्पन्न: प्रमाता।"

अथवा

अपवादो नाम रज्जविवर्तस्य सर्पस्य रज्जमात्रत्व-वद्रस्तविवर्तस्यावस्तनोऽज्ञानादे: प्रपञ्चस्य वस्तमात्रत्वम। तदक्तम-सतन्वतोऽन्यथाप्रथा विकार इत्यदीरित:, अतन्वतोऽन्यथाप्रथा विवर्त इत्यदीरित: इति।

(ग) द:खत्रयाभिघाताजिज्ञासा तदपघातकेहेतौ।
दष्टे सापार्थाचेन्नैकान्तान्यन्ततोभावात।।

अथवा

एष प्रत्ययसर्गो विपर्ययाऽशक्तितष्टिसिद्धयाख्य:।
गण वैषम्यविमर्दात तस्य च भेदस्त पञ्चाशत।।

(घ) वेदप्रतिपाद्यन्वे प्रयोजनवन्वे च सत्यर्थत्व धर्मन्वमिति धर्मलक्षणमपन्नम।

अथवा

अङ्गप्रधानसम्बन्धबोधको विधिर्विनियोगविधि:।

खण्ड—ग

3. निम्नलिखित में से किन्हीं **पाँच** पर टिप्पणियाँ लिखिए : $5 \times 6 = 30$

(क) अर्थवाद

(ख) त्रिविधकारण

(ग) सत्कार्यवाद

(घ) सक्ष्मशरीर

(ङ) उपमान

(च) सांख्यसम्मत पदार्थ

(छ) भावना